

अस्मि भावना

चैतन्य-चारु चिन्त्य चित्त-चैन चुनूँगा
चैतन्य को चुना है चैतन्य रहूँगा ॥
अब जागृति के गीत ही मैं नित्य गुनूँगा
चैतन्य का बना हूँ चैतन्य रहूँगा ॥

अनित्य भावना

टूटेगा एक क्षण में जीवन का ये दुःस्वप्न
छूटेगा देख! कण कण, बिखरेगा अंग अंग
बदलेगा शेष सब कुछ पर मैं न बदलूँगा
अस्तित्व से अनंत, मैं चैतन्य रहूँगा ॥

अशरण भावना

दुःख-मुक्ति सुख-भुक्ति की न आस करूँगा
असहाय इस जगत में न विश्वास धरूँगा
सब काल के खिलौने, मैं काल हरूँगा
अरहंत सिद्ध शरण, मैं चैतन्य रहूँगा ॥

संसार भावना

नहीं भव्य यहाँ कुछ भी रमणीय नहीं है
सौन्दर्य-भोग छल हैं, करणीय नहीं हैं
मैं थक चुका भटक अटक के अब न भ्रमूँगा
भवितव्यता विचार, मैं चैतन्य रहूँगा ॥

एकत्व भावना

है यात्रा अकेली बस भीड़ साथ में
नहीं साथ कोई साथी सामान हाथ में
पर संग का दुःस्वप्न तोड़ अब मैं जगूँगा
हूँ एक शुद्ध ज्ञायक, चैतन्य रहूँगा ॥

अन्यत्व भावना

अनन्य के परिणाम से न अन्य फल लहे
न अन्य का परिणाम-फल अनन्य को मिले
अन्य की अनन्य से न सन्धि लखूँगा
नहीं देह-कर्म-राग, मैं चैतन्य रहूँगा ॥

अशुचि भावना

यह देह शमशान-तुल्य म्लान, भीति है
वपु-राग-घृणित, शोकर-पुरीष-प्रीति है
संयम-चिता-तपा अशुचिता-देह तजूँगा
शुचि आत्मा सँभाल मैं चैतन्य रहूँगा
नेह जुदी देह को किंचित भी न दूँगा
स्वरूप-प्रीति धार मैं चैतन्य रहूँगा ॥

आश्रव भावना

इन इन्द्रियों को मन-वच-तन जो भी लुभाया
मिथ्यात्व-कषायों से खूब कर्म कमाया
खुद भूल से बँधा हूँ, अब मूल भजूँगा
सब राग-द्वेष टाल मैं चैतन्य रहूँगा ॥

संवर भावना

मैं सिद्ध हूँ स्वभाव से ये सिद्ध करूँगा
करमों के अकर्मण्य को प्रसिद्ध करूँगा
आयेंगी जब कषायें न उन से मिलूँगा
भाऊँगा भेद-ज्ञान, मैं चैतन्य रहूँगा ॥

निर्जरा भावना

वैराग्य बोधि जागे, लगा शील संवरने
तप देख कर्म भागे, लगा धर्म बरसने
निश्चिन्त हो, विराग-पथ प्रवास करूँगा
शुद्धोपयोग लीन मैं चैतन्य रहूँगा ॥

लोक भावना

है दुःख नरक में स्वर्ग में सुख झूठी बात है
मिथ्यात्व से दुखी निगोद लोक-व्याप्त है
सुख का स्वयं पिटारा, क्यों दुःख लहूँगा?
त्रैलोक्य का तिलक हूँ, चैतन्य रहूँगा ॥

बोधि-दुर्लभ भावना

नहीं रूप रंग देह वचन मेरे चयन के
सौभाग्य! बोधि-ध्यान मुझे भा रहे मन में
नर भव मिला निराला नहीं व्यर्थ करूँगा
चारित्र चार धार मैं चैतन्य रहूँगा ॥

धर्म भावना

पाप को तो पापी भी पाप जानते
पर पुण्य को धर्मात्मा ना धर्म मानते
है साम्य आत्म-धर्म, वीतराग बनूँगा
शुद्धात्मा कमाल में चैतन्य रहूँगा ॥

चैतन्य-चारु चिन्त्य चित्त-चैन चुनूँगा
चैतन्य को चुना है चैतन्य रहूँगा ॥
अब जागृति के गीत ही मैं नित्य गुनूँगा
चैतन्य का बना हूँ चैतन्य रहूँगा ॥